8 कन्यादान

➤ ऋतुराज

कविता का सार

हमारे भारतीय समाज में साधारणत: बेटी का कन्यादान करने (विवाह करने) के बाद विदा करने से पूर्व माँ-बहनें-भाभियाँ उसे कुछ सीख देती हैं, ताकि ससुराल में जाकर वह सबको प्रसन्न कर सके और स्वयं भी प्रसन्न रह सके। आज के बदलते समाज में जहाँ वधू को लक्ष्मी न समझकर केवल दान-दहेज़ लाने वाली मशीन समझा जाने लगा है और पर्याप्त दहेज़ न लाने पर जलाकर मारा जाता है, उसी के विरोध में कवि ने माँ के मुख से बेटी को कुछ नई सीख दी है; जैसे - आग रोटियाँ बनाने के लिए होती है, न कि आत्महत्या करने के लिए। इस प्रकार बेटी को पहले से ही माँ सावधान कर देती है। विदा कराने से पूर्व माँ उसे चार महत्वपूर्ण सीख देती हैं। पहली सीख, पानी में झाँककर अथवा दर्पण में देखकर अपने रूप-यौवन पर रीझ मत जाना। दूसरी सीख, आग का उपयोग जलने-जलाने के लिए नहीं बल्कि भोजन बनाने के लिए करना। तीसरी सीख, गहने-कपड़ों के मोह में न फँसना और चौथी सीख, लड़की होने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन लड़की का अर्थ केवल कोमलता और असहाय अबला का भाव नहीं है। इसलिए माँ बेटी से कहती हैं कि कोमलता, रूप और माधुर्य के साथ तुम लड़की या स्त्री जाति अवश्य बनी रहो लेकिन अपने को कभी भी कमज़ोर और असहाय मत समझना।

कविता की व्याख्या

(1)

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।

शब्दार्थ : प्रामाणिक = प्रमाणों से सिद्ध, **पूँजी** = धन, **सयानी** = बड़ी, **आभास** = अहसास, हलका अनुभव, **पाठिका** = पढ़ने वाली, **बाँचना** = पढ़ना, **लयबद्ध** = सुर-ताल-लय में बँधी।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि कन्यादान करते समय माँ के दिल पर क्या गुजरती है, यह तो सामान्य रूप से सभी समझ सकते हैं। लाड़-प्यार से पाली गई बेटी माँ के हृदय के इतने करीब होती है कि उसे सदा अपने आँचल के नीचे छुपा रखने का मन करता है। किंतु माँ होने के नाते वह ऐसा नहीं कर सकती है। समाज की परंपराओं को निभाती हुई माँ बेटी का विवाह कर देती है। 'कन्यादान' शब्द में ही कन्या होने का और वह भी कम उम्र की भोली-भाली बेटी होने का पता चलता है। भारतीय समाज में कन्यादान पुण्य का कर्म माना जाता है। यहाँ कवि ने बेटी को माँ की अंतिम पूँजी के रूप में चित्रित किया है, जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपनी जमा-पूँजी का अंतिम भाग बहुत सोच-समझकर खर्च करता है और उस आखिरी पूँजी को दान करने में कितना मनोकष्ट होता है, उसी प्रकार माँ को भी अपना कर्तव्य निभाने में यानी अपनी बेटी को विदा कराने में बहुत ही दुख होता है। उसे सदा यह आशंका बनी रहती है कि ससुराल जाकर कहीं मेरी बेटी को कोई दुख-कष्ट तो नहीं होगा, विवाह के बाद के सुखी जीवन की वह कल्पना कर सकती है किंतु जिसने कभी दुख देखा ही नहीं, कष्ट सहा ही नहीं, भला वह दुख-कष्ट का सामना किस प्रकार करेगी। सुख-सौभाग्य के हलके आभास को कवि ने यहाँ धुँधला प्रकाश कहा है, जिसे वह अबोध सरल बेटी पढ़ सकती है, किंतु अनचाहे दुखों को पढ़ नहीं सकती, समझ नहीं सकती।

विशेष–

(*i*) इसमें माँ के हृदय की कोमल भावनाओं का और आशंकाओं का कवि ने बहुत सुंदर वर्णन किया है।
(*ii*) यह कविता मुक्तक छंद में लिखित है।
(*iii*) सरल खड़ी बोली में इसकी रचना की गई है।
(*iv*) कहीं-कहीं तत्सम शब्दों का पुट भी पाया जाता है, जैसे - पाठिका, प्रामाणिक, आभास आदि।
(*v*) प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है, जैसे - धुँधला प्रकाश।

(2)

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

शब्दार्थ : रीझना - मन ही मन प्रसन्न होना, **आभूषण** - गहना, **शाब्दिक** - शब्दों का, **भ्रम** - धोखा।

व्याख्या : माँ अपनी भोली सरल बेटी से कहती हैं कि पानी में देखकर अपने रूप-सौंदर्य पर कभी मत रीझना। पानी में देखने का तात्पर्य

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

यहाँ अपने प्रतिबिंब से है, चाहे वह जल में हो या दर्पण में। नव यौवन का रूप-सौंदर्य युवतियों को बरबस अपने को अति सुंदरी मानने पर विवश कर देता है। माँ तभी अपनी बेटी को पहली सीख यही देती है कि रूप-सौंदर्य स्थायी नहीं है। अत: अपने रूप-सौंदर्य पर मिथ्या गर्व करना मूर्खता है क्योंकि यह नश्वर है। प्रत्येक घर में आग का उपयोग खाना बनाने के लिए होता है, किंतु दहेज के लालची लोग आजकल नई-नवेली दुलहन को जलाने के लिए भी आग का उपयोग करते हैं। माँ बेटी को दूसरी महत्वपूर्ण सीख देती हैं कि आग का उपयोग कभी भी जलने-जलाने के लिए नहीं करना, इस प्रकार भविष्य में किसी प्रकार होने वाली दुर्घटना से बचने के लिए माँ बेटी को पहले ही सचेत कर देती हैं।

अब माँ उसे तीसरी सीख देती हैं कि लड़कियाँ सदा से ही कपड़े-गहने को अधिक महत्व देती हैं, किंतु नारी जीवन के ये बंधन हैं। कवि कहते हैं कि नए-नए कपड़े-गहने दिलाकर पुरुष अपनी पत्नी को बंधन में बाँध लेते हैं। माँ यहाँ भी बेटी को सचेत करती हैं। चौथी अंतिम सीख यह है कि लड़की होना बुराई नहीं है, किंतु लड़की जैसी कमजोर-असहाय दिखाई देना मूर्खता है। आवश्यकता पड़ने पर लड़की को अपनी स्वाभाविक कोमलता, लज्जा आदि को परे हटाकर दृढ़ता से अपनी बात कहनी चाहिए। किसी भी लड़की को अन्याय-अत्याचार सहन नहीं करना चाहिए। अन्याय का सदा विरोध करना चाहिए, इसी में लड़कियों की भलाई है।

विशेष–

(*i*) उपर्युक्त पंक्तियों में परंपरा से परे हटकर आज की आवश्यकतानुसार सीख दी गई हैं।

(*ii*) अपने को कमज़ोर न समझने की सीख देकर माँ ने पारंपरिक समाज के प्रति आघात किया है।

(*iii*) अन्याय-अत्याचार को न सहन करना लड़कियों के लिए खासकर उचित है।

(*iv*) कवि ने तत्सम-तद्भव शब्दों का उचित प्रयोग किया है।

(*v*) अंतिम दो पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार है।

समेटिव असेसमेंट के लिए

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होने पर लड़की जैसी मत दिखाई देना?

उत्तर : हमारे विचार से माँ ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसने समाज में पारंपरिक रूप से चले आ रहे स्त्री-जीवन को जिया था। माँ को अपने जीवन में अनेक अन्याय, शोषण और अपमान सहन करने पड़े थे, किंतु अपनी बेटी के साथ भी ऐसा हो, वह नहीं चाहतीं। इसीलिए माँ बेटी को कुछ सीख देती हैं, जिनमें प्रमुख है – लड़की होने पर लड़की जैसी मत दिखाई देना। इसका तात्पर्य है कि अपने भीतर लड़कियों के सहज-स्वाभाविक गुण, जैसे-नम्रता, कोमलता, लज्जा, शालीनता, मधुरता आदि को ज़रूर सहेजे रखना, सबको यथायोग्य सम्मान देना, किंतु अन्याय-अत्याचार सहन नहीं करना। साधारण लड़कियों की तरह कमज़ोर और असहाय मत दिखना। अन्याय और शोषण के विरुद्ध अवश्य ही अपनी आवाज़ बुलंद करना।

2. (क) 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं' इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर : इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की उस स्थिति की ओर संकेत किया गया है, जबकि वह विवाहित होने के बाद पर्याप्त दहेज न लाने पर ससुराल के लोगों के द्वारा मानसिक और शारीरिक रूप से शोषित होती है। न चाहते हुए भी आत्मदाह करने के लिए मजबूर हो जाती है। इस पंक्ति में सामाजिक कुरीति-दहेज प्रथा की ओर संकेत किया गया है।

(ख) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों ज़रूरी समझा?

उत्तर : माँ ने बेटी को सचेत करना इसलिए ज़रूरी समझा क्योंकि वह अभी सयानी नहीं हुई थी, बहुत भोली थी। उसे दुखों की पहचान नहीं थी। वह जीवन में अब तक सुखद बाल्यावस्था की स्थितियों में ही जी रही थी। अत: माँ की सीख से सचेत होकर वह विषम स्थितियों में अपनी सूझ-बूझ से अन्याय-अत्याचार और शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठा सके। घुट-घुटकर जीने या आत्म-दाह करने के बजाय वह अपने स्वाभिमान के साथ अपना हक माँग सके।

3. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की' इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभरकर आ रही है, उसे शब्दबद्ध कीजिए।

उत्तर : इन पंक्तियों को पढ़कर ऐसी लड़की की छवि हमारे सामने उभरकर आती है, जो विवाह योग्य हो गई है। जिसने सुखपूर्वक परंपरागत रूप में अब तक अपना जीवन बिताया है। वह अत्यंत भोली है। स्त्री जीवन के पारंपरिक रूप के पीछे छिपे शोषण का उसे ज्ञान नहीं। उसे दुखों की पहचान नहीं है। उसे जीवन जिस रूप में मिला है, वही यथार्थ लगता है। वह जीवन के सुंदर सपनों को तो देखने लगी है, परंतु उनकी पूर्ति में बाधक बनने वाली स्थितियों का उसे ज़रा भी आभास नहीं है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

4. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही है?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : स्त्री होने की नाते बेटी ही माँ के सुख-दुख के सबसे निकट होती है। भारतीय परंपरानुसार 'कन्यादान' पुण्य का काम माना जाता है। 'कन्यादान' शब्द में ही बेटी की कम उम्र और भोली-भाली होने का पता चलता है। कवि ने बेटी को माँ की अंतिम पूँजी इसलिए कहा है कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपनी जमा-पूँजी का अंतिम भाग बहुत सोच-समझकर खर्च करता है और उस आखिरी पूँजी को दान करने में कितना मनोकष्ट होता है, उसी प्रकार माँ को भी अपना कर्तव्य निभाते हुए बेटी को विदा कराने में अत्यंत दुख का अनुभव हो रहा है। उसका यह दुख किसी व्यक्ति के अंतिम पूँजी खर्च करने के समान है।

5. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : माँ ने बेटी को यह सीख दी कि कभी पानी में झाँककर अपनी सुंदरता पर खुश न होना। वह जिस चूल्हे पर रोटी सेंक सभी का पेट भरेगी, उस चूल्हे की धधकती आग से कभी आत्मदाह करने की भूल मत करना। वस्त्र और आभूषणों को कभी महत्व न देना, उन्हें अपने सबसे बड़े बंधन का कारण समझना। माँ ने अंतिम शिक्षा यह दी कि लड़की होकर भी कभी लड़की जैसी न दिखना। अर्थात सौंदर्य और कोमलता के झूठे बंधन में बँधकर कमज़ोर बन कर शोषण की शिकार हो अपने अस्तित्व को न खो देना, अपितु अन्याय-अत्याचार का डटकर सामना करना।

रचना और अभिव्यक्ति

6. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना कहाँ तक उचित है? **[CBSE 2011 (Term – II)]**

उत्तर : हमारी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना उचित नहीं है। हालाँकि हिंदू धर्म में कन्यादान को सबसे बड़ा दान माना गया है। परंतु स्त्री भी पुरुष की तरह शारीरिक और मानसिक रूप से समर्थ है। वह अपने देश के लिए योगदान देने में समर्थ होती है। अत: उसे एक वस्तु मान कर दान करना अनुचित है। आज के युग में पुत्र-कन्या दोनों समान हैं। समाज और परिवार में दोनों का अपना-अपना महत्वपूर्ण स्थान है। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। जीवन की गाड़ी दोनों के सहयोग से ही चलती है। अत: कन्या के साथ दान की बात करना अनुचित है।

अन्य परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर (CCE पद्धति पर आधारित)

(I) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।

1. अंतिम पूँजी कौन है और क्यों?

उत्तर : माँ अपनी बेटी से ही अपने सुख-दुख की बातें करती थी। बेटी ही उसके हृदय का अत्यंत निकट है और उसका सब कुछ है। अत: बेटी ही उसकी अंतिम पूँजी है।

2. 'लड़की अभी सयानी नहीं थी' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर : लड़की के सयानी नहीं होने का आशय है– उसका भोला और सरल होना। उसे दुनियादारी की कोई समझ नहीं है। वैवाहिक सुख की कल्पना तो वह कर सकती है, किंतु ससुराल में मिलने वाली ताड़नाओं को वह नहीं जानती। अत: माँ नहीं चाहती कि वह ससुराल में जाकर दब जाए और अत्याचार सहे।

3. 'धुँधले प्रकाश' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : सुख-सौभाग्य के हलके आभास को कवि ने धुँधला प्रकाश कहा है। विवाह सुख की अस्पष्ट-सी जानकारी होना।

4. किसके दुख को प्रामाणिक कहा गया है और क्यों?

उत्तर : लड़की की माँ के दुख को प्रामाणिक कहा गया है। क्योंकि माँ अपना हर सुख-दुख लड़की के साथ बाँटती थी। वह इस बात से दुखी थी कि बेटी के चले जाने के बाद वह अकेली रह जाएगी।

5. 'जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर : उपमा अलंकार।

(II) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

[CBSE 2011 (Term – II)]

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

1. माँ ने बेटी को अपने रूप पर मोहित न होने की सीख क्यों दी?

उत्तर : माँ ने बेटी को अपने रूप-सौंदर्य पर मोहित न होने की सीख इसलिए दी क्योंकि रूप-सौंदर्य पर मिथ्या गर्व करना मूर्खता है। रूप-सौंदर्य स्थायी नहीं है।

2. माँ ने आभूषणों को स्त्री जीवन का बंधन क्यों कहा है?

उत्तर : आभूषण सदा से स्त्री जीवन के बंधन रहे हैं। स्त्रियाँ नए-नए आभूषण पाकर बहुत खुश होती हैं। इसी खुशी में मानसिक रूप से हर बंधन को स्वीकार कर लेती हैं तथा अपनी आज़ादी खो देती हैं।

3. शाब्दिक भ्रम से क्या आशय है?

उत्तर : शब्दों द्वारा ऐसा वर्णन करना कि कोई छोटी-सी चीज़ भी बहुत बड़ी दिखाई दे। कोई कल्पना साकार लगे।

4. 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है, जलने के लिए नहीं' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है, जलने के लिए नहीं। पंक्ति का आशय यह है कि ससुराल में जाने के बाद वहाँ के लोगों (जैसे सास, ससुर व ननद) के द्वारा शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित करने पर लड़की अपना आपा न खोए, मानसिक संतुलन न खोए। आग लगाकर मर न जाए। बल्कि मानसिक संतुलन रखकर साहस के साथ उनका जबाव दें।

5. माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना, पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

उत्तर : 'लड़की हो लड़की जैसी दिखई मत देना' माँ ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि लड़की स्वभाव से सरल, भोली और कोमल रहे यह ठीक है किन्तु अपने को दुर्बल और असहाय न समझे। ताकि ससुराल में उस पर 'अत्याचार न किया जाए, उसका शोषण न हो।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' इससे माँ वस्तुतः क्या कहना चाह रही है?

उत्तर : माँ के कहने का अभिप्राय है कि उसकी लड़की स्वभाव से सरल, भोली और कोमल रहे, किंतु वह अपने को असहाय-दुर्बल न समझे। उसके ससुराल वाले उसकी सरलता का गलत फायदा न उठाएँ। उस पर अत्याचार और शोषण न करें।

2. माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों ज़रूरी समझा?

उत्तर : हर माँ अपनी बेटी की शादी की खुशहाली के सपने सँजोती है। वह नहीं चाहती कि उसके ये सपने टूटें। उसकी बेटी के साथ कुछ अनहोनी हो इसीलिए उसने बेटी को सचेत करना ज़रूरी समझा।

3. 'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा दी गई सीख में नवीनता क्या है?

उत्तर : इस कविता में माँ ने सदियों से चली आ रही पारंपरिक सीख के स्थान पर परंपरा से हट कर आज के युग की आवश्यकता के अनुरूप सीख दी है। यही इसमें नवीनता है।

4. लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को क्या अनुभूति हो रही थी?

उत्तर : लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को दुख की अनुभूति हो रही थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने जीवन की अंतिम पूंजी किसी को दान में दे रही है।

5. 'आग ..... जलने के लिए नहीं' इसमें कौन-सा तथ्य छिपा हुआ है?

उत्तर : माँ ने बेटी को समझाया कि आग पर रोटियाँ सेंकी जाती हैं। स्वयं को जलाया नहीं जाता, अर्थात आग लगाकर जल भरने की भूल मत करना। अन्याय का विरोध करना, संघर्ष करना, किंतु आत्महत्या नहीं।

6. 'कन्यादान' कविता में कन्या की कैसी छवि आपके सामने उभर रही है? लिखिए।

उत्तर : 'कन्यादान' कविता में कन्या का भोला रूप उभर रहा है। वह दुनिया की चालों से अनजान है तथा वैवाहिक सुखों के बारे में थोड़ा बहुत जानती है। ससुराल में मिलने वाले अन्य दुखों के बारे में वह कुछ नहीं जानती।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. क्या माँ द्वारा दी गई सीख आपको उचित लगती है? यदि हाँ तो क्यों? [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : कविता में माँ ने अपनी बेटी को जो सीख दी है, वह उसके भले के लिए दी है। यह उसका अपना अनुभव रहा है। उसने लोगों का व्यवहार देखा है। समाज में नारी शोषण की सारी कहानी जानती है। माँ नहीं चाहती थी कि कोई उसकी बेटी की सरलता और भोलेपन का फायदा उठाए। उसे अपने को कमजोर न समझने की सीख देकर माँ ने पारंपरिक समाज के प्रति आघात किया है। इसी कारण यह सीख आज के युग के अनुकूल है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

2. 'धुँधले प्रकाश' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : इस कथन से कवि का तात्पर्य है कि लड़की बहुत सीधी-सादी भोली-भाली है। जीवन के सुख-दुख की उसको बहुत कम समझ है। अभी तक घर में उसको स्नेहपूर्ण व्यवहार मिला है। वह सुख और स्नेह को ही जानती है। वह इतनी अधिक परिपक्व नहीं है कि जीवन के दुखों का सामना कर सके।

3. 'पानी में झाँकने' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : 'पानी में झाँकने' का तात्पर्य अपने प्रतिबिंब को देखने से है। चाहे वह जल में हो या दर्पण में। नवयुवती अपने रूप-सौंदर्य पर बहुत प्रसन्न होती है और बार-बार अपना प्रतिबिंब देखकर मोहित होती है।

4. 'कन्यादान' कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर : 'कन्यादान' कविता नारी-जागृति से संबंधित है। इसमें स्त्री के परंपरागत रूप से हटकर यथार्थ रूप का बोध कराया गया है। यह कविता स्त्री की कमज़ोरियों को भी उजागर करती है। यदि स्त्री अपनी कमज़ोरियों के प्रति सचेत हो जाए, अपनी कोमलता और सरलता के प्रति सजग हो जाए तो वह शक्तिशाली बन सकती है और प्रतिकूलताओं पर विजय पा सकती है।

5. 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है, जलने के लिए नहीं' - इस काव्यांश द्वारा समाज में नारी की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है? [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है, जलने के लिए नहीं' इस काव्यांश द्वारा समाज में नारी की उस दयनीय स्थिति की ओर संकेत किया गया है जिसमें कोई भी नारी अपने ससुराल पक्ष के लोगों जैसे -पति, सास, ससुर और ननद आदि के द्वारा प्रताड़ित होने पर अपना मानसिक संतुलन खो देती है और आग में जलकर मर जाती है।

6. माँ ने बेटी को जीवन के कटु सत्यों से परिचित क्यों कराया? - कन्यादान कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर : माँ ने बेटी को ससुराल में मिलने वाली शारीरिक-मानसिक प्रताड़ना से परिचित कराया। अत: उसने बेटी को समझा दिया कि ससुराल में शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना मिलने पर वह अपना मानसिक संतुलन न खोए तथा आग में जलकर मरने का प्रयास न करें। क्योंकि आग खाना बनाने के लिए है, जलकर मरने के लिए नहीं।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

फ़ॉरमेटिव असेसमेंट के लिए

ऋतुराज की रचनाएँ सामाजिक सरोकार से जुड़ी होती हैं। उसमें इन्होंने समाज में व्याप्त विषमताओं और विवशताओं का सुंदर चित्रण किया है। साथ ही साथ समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने का भी प्रयास किया है।

क्रियाकलाप

ऋतुराज द्वारा लिखित इस कविता के आधार पर अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में एक परिचर्चा का आयोजन कर सकते हैं। आज के बदलते आर्थिक-सामाजिक परिवेश में 'कन्यादान' की परंपरा का निभाना कितना उचित है—इस विषय पर **परिचर्चा** का आयोजन किया जा सकता है।

परिचर्चा

यह समूह में किया गया सामान्य वार्तालाप है जिसमें कम-से-कम दो सदस्य तथा एक संचालक का होना आवश्यक है। परिचर्चा में दिए गए शीर्षक/विषय पर सभी छात्र/छात्राएँ प्रकाश डालते हैं। कुछ छात्र परिचर्चा के विषय का समर्थन करते हैं, तो कुछ विरोध में बोलते हैं। परिचर्चा में संचालक का कार्य अति महत्वपूर्ण होता है। वह परिचर्चा के विषय पर थोड़ा प्रकाश डालकर छात्र-छात्राओं को एक समय-सीमा में अपनी बात कहने या अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर देता है। इसके अतिरिक्त वह विषय से भटक जाने पर छात्र को सचेत करता है एवं बीच-बीच में अर्थ को स्पष्ट करने के लिए बहुत छोटी-छोटी टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत करता है। संचालक सबसे अंत में एक निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। यहाँ अध्यपाक या अध्यापिका संचालक की भूमिका बखूबी निभा सकते हैं।

कक्षा-कार्य

- प्राचीन भारत में नारी की शिक्षा और सामाजिक स्थिति पर चर्चा करें।
- (मध्य युग में) मध्यकालीन भारत में नारियों की स्थिति क्यों बिगड़ी? स्त्री-शिक्षा का विरोध क्यों हुआ? इस संबंध में आलोचना करें।
- वर्तमान भारत में शहरों और गाँवों में स्त्रियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति कैसी है?

गृह-कार्य

- 'आधुनिक नारी और उसकी उपलब्धियाँ' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।
- भारत में 'शिक्षा का अधिकार' नामक अधिनियम पर एक टिप्पणी लिखिए।

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN